OM 18_Page 1 and 2 01-12-2014 20:05 Page 3

आकांक्षा से अभीप्सा तक...

आकांक्षा यानी संसार की आकांक्षाएं। आकांक्षा यानी आकांक्षाएं। एक नहीं, अनेक। संसार अर्थात् अनेक। जब आकांक्षा मिटकर अभीप्सा बनती है – अभीप्सा यानी आकांक्षा, आकांक्षाएं नहीं। एक की आकांक्षा का नाम अभीप्सा, अनेक की अभीप्सा का नाम आकांक्षा। जब सारी आकांक्षाओं की किरणें इकट्ठी हो जाती हैं और एक सत्य पर, परमात्मा पर, केन्द्रित हो जाती हैं, तो अभीप्सा। आकांक्षा और आकांक्षाओं का जाल जब संग्रहीभूत हो जाता है, तो अभीप्सा पैदा होती है। किरणें जब इकट्ठी हो जाती हैं, तो आग पैदा होती है। किरणें अनेक, आग एक।

- ब्र. कु. गंगाधर

यहां तक तो समझ में बात आ जाती है कि आदमी धन को चाहता है, पद को चाहता है, पत्नी को चाहता है, बेटे को चाहता है, भाई को चाहता है, जीवन चाहता है, लंबी उम्र चाहता है। यह सब चाहत, ये सब चाहतें जब इकट्ठी हो जाती हैं और आदमी सिर्फ परमात्मा को चाहता है – यहाँ तक भी समझ में आ जाता है। क्योंकि बहुत आकांक्षाएं जिसने की हैं वह इसकी भी कल्पना तो कम से कम कर ही सकता है कि सभी आकांक्षाएं इकट्ठी हो गयीं, सभी छोटे नदी-नाले गिर गए एक ही गंगा में और गंगा बहने लगी सागर की तरफ। लेकिन जब आकांक्षा के बाद अभीप्सा भी खो जाती है तब क्या बचता है? नदी-नाले खो जाते हैं गंगा में; फिर जब गंगा खो जाती है सागर में, तो क्या बचता है? सागर बचता है। गंगा नहीं बचती।

पहले आपकी आकांक्षाएं खो जाएंगी, तुम बचोगे। फिर आप भी खो जाओगे, परमात्मा बचेगा। जब तक तुम आकांक्षाओं में भटके हुए हो, तब तक तुम तीन-तेरह हो, टुकड़े-टुकड़े हो। जब आपकी सारी आकांक्षाएं अभीप्सा बन जाएंगी, तुम एक हो जाओगे, आप योग को उपलब्ध हो जाओगे। योग यानी जुड़ जाओगे।

सांसारिक आदमी खंड-खंड है, एक भीड़ है। एक मजमा है। आध्यात्मिक आदमी भीड़ नहीं है, एक एकांत है। आध्यात्मिक आदमी इकट्ठा है। योग को उपलब्ध हुआ है। सारी आकांक्षाएं सिकोड़ लीं उसने। लेकिन अभी है। अभी होना की मात्र बाधा बची। अभी तुम हो–अभीप्सा में–और परमात्मा है। यद्यपि तुम एक हो गए हो, लेकिन परमात्मा अभी दूसरा है, पराया है।

इसे थोड़ा समझो।

सांसारिक आदमी भीड़ है। अनेक है। आध्यात्मिक आदमी एक हो गया, इकट्ठा हो गया। इंटीग्रेटेड, योगस्थ। लेकिन अभी परमात्मा बाकी है। तो द्वैत बचा। सांसारिक आदमी अनेकत्व में जीता है, आम आदमी द्वैत में। भक्त बचा, भगवान बचा। खोजी बचा, सत्य बचा। सागर बचा, गंगा बची। अब भक्त को अपने को भी डुबा देना है, ताकि भगवान ही बचे, ताकि सागर ही बचे। गंगा को अपने को भी खोना है। अपने से एक, फिर एक से शून्य, तब कौन बचेगा? जहां से तुम आए थे, वहीं तुम लौट जाओगे। जो तुम्हारे होने के पहले था, वही तुम्हारे बाद बचेगा। वर्तुल पूरा हो जाता है। जन्म के पहले तुम जहां थे, मरने के बाद वहीं पहुंच जाते हो। थोड़ा सोचो; गंगा सागर में गिरती है, गंगा सागर से ही आई थी–सूरज की किरणों पर चढ़ा था सागर का जल, सीढ़ियां बनाई थीं सूरज की किरणों की, फिर बादल घनीभूत हुए थे आकाश में, फिर बादल बरसे थे हिमालय पर, बरसे थे मैदानों में, हज़ारों नदी-नालों में बहे थे गंगा की तरफ–गंगोत्री से बही थी गंगा, मेघ से आई थी, मेघ सागर से आए थे; फिर चली वापस, फिर सागर में खो जाएगी।

वही बचेगा, जो तुम्हारे होने के पहले था। उसे सत्य कहो...। तुम एक लहर हो। सागर तुम्हारे पहले भी था। लहर खो जाएगी, सो जाएगी, सागर फिर भी होगा। और ध्यान रखना, सागर बिना लहरों के हो सकता है, लहर बिना सागर के नहीं हो सकती। कभी सागर में लहरें होती हैं, कभी नहीं भी होतीं। जब लहरें होती हैं, उसको हम सृष्टि कहते हैं। जब लहरें नहीं होतीं उसको हम प्रलय कहते हैं। अगर सारी लहरों को सोचें, तो सृष्टि और प्रलय। अगर एक-एक लहर का हिसाब करें, तो जन्म और मृत्यु। जब लहर नहीं होती, तो मृत्यु। जब लहर होती है, तो जन्म। लेकिन जब लहर मिट जाती है तब क्या सच में मिट जाती है? आकार मिटता होगा, जो लहर में था। जो लहर में **-शेष पेज 3 पर..**

अवगुण चित्त न धरो...

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

जिसकी जो सेवा है, जहाँ हैं निमित्त हैं, निमित्त भी निमित्त मात्र, हुआ ही पड़ा है क्योंकि ड्रामा की नॉलेज इतनी अच्छी है। इतनी सेवा की वृद्धि में आप सब निमित्त यहाँ बैठे हो, तो मैं क्या हूँ? कुछ नहीं। मैंने नहीं माखन खायो रे मैय्या... रीयली मैंने कुछ नहीं किया। वंडर है बाबा का, सेकेण्ड में जो बात हुई, उसमें जो निमित्त बना, उससे किसी का भला हुआ तो बस, ठीक है ना! चिंतन नहीं है। तो निमित्त बनने में बहुत फायदा है, कोई भी निमित्त बनें, कोई कहे मैं क्या करुँ मुझे समझ में नहीं आता है... अरे क्या बोलते हो? निमित्त भाव वाले का संस्कार और स्वभाव अपना चला गया। तो औरों का भी अगर कुछ होगा तो वह भी चला जायेगा। अगर मेरे में सम्बन्ध में खिटपिट है और जहाँ रूहानियत है, भावना अच्छी है, इसमें कल्याण भरा पड़ा है, पास्ट की बात कभी मिक्स नहीं करेंगे।

एक बार मम्मा को मैंने पूछा कि मैं पुरुषार्थ में क्या ध्यान रखूँ? तो मम्मा ने कहा किसका अवगुण थोड़ा भी चित्त पर नहीं रखना। वो दिन और आज का दिन। अगर कोई भी बात मेरे चित्त पर है तो मैं एकाग्रचित्त नहीं हो सकती। अन्तर्मुखता से एकाग्रता होती है। चित्त में माना मेमोरी के अन्दर कोई बात प्रिंट हुई पड़ी है तो वही बात बुद्धि में, मन में रहती है। तो एकाग्रता के लिए मन को शान्त करना पड़ता है, चित्त को साफ रखना पड़ता है। ऐसा डीप पुरुषार्थ करके एक मिसाल बनो तो बाबा बहुत प्यार करता है, दुआयें देता है, सकाश देता है। यह जो हमको अच्छी पालना, पढ़ाई मिली है, अन्तिम जन्म है, अन्तिम घड़ियां हैं, अभी पुरुषार्थ करेंगे तो आदत पड़ जायेगी। अगर अभी ऐसा पुरुषार्थ नहीं करेंगे, अपने को मिया मिट्ठू कहलायेंगे, दिखावे वाला पुरुषार्थी बनेंगे तो बाबा का राइट इन्स्ट्रूमेन्ट नहीं बन सकेंगे। थोड़ा माइन्ड नहीं करना कई ऐसी आत्मायें हैं जो बुक लिखने वाले हैं, या कोई भी विशेषतायें, स्थूल कलायें हैं वो करते, दिखाते, कभी -न-कभी, कुछ -न-कुछ उन्हें अभिमान आ जाता है। पर बाबा जो मुरली चलाता है उस मुरली से कितना फायदा लिया है। एक-एक मुरली हमारे जीवन को बदलने वाली है। बाबा के यज्ञ से हमें कितनी पालना मिल रही है, कितनी ऊँची पढ़ाई हमें मिल रही है। तो मैं निमित्त बनने वालों की तरफ इशारा करती हूँ। मेरी सबके प्रति यही भावना है। जैसे बाबा ने हमको कहा सुबह को उठना, मुरली पढ़ना, क्लास करना, भोग बनाना, खाना बनाके खिलाना...तब लण्डन मधुबन का मॉडल बना है। बहुत करके जो भी सेन्टर खुले होंगे, गुरूवार को भोग न लगता हो तो भोग बनाने वाले, भोग लगाने वाले सभी के ऊपर बहुत ज़िम्मेवारी है। सब निमित्त बने हुए पर बहुत ज़िम्मेवारी है, लेकिन यह ज़िम्मेवारी सिरदर्द वाली नहीं है, स्नेह वाली, सच्चाई वाली, प्रेम वाली है। जो भी कुछ सेवा करता है उनकी रिज़ल्ट बहुत अच्छी है, जो आज यह सब देख रही हूँ। मुझे पता नहीं था मेरी इतनी एज होगी और मैं इतनी रिज़ल्ट देखूंगी। यह भी आप लोगों की दुआयें हैं, प्यार है जो मुझ आत्मा को इस जीवन में अच्छा जीना सिखाया है। मुझे गैरंटी है मैं पूरे 84 जन्म ही ब्रह्माबाबा के साथ होंगी। अन्तिम जन्म में भी साथ थी, बाबा अच्छा लगता था तो और जन्म में भी साथ ही रहूँगी क्योंकि ब्रह्माबाबा को फॉलो करना अच्छा लगता है, ईज़ी है।

निमित्त यानी एक सेकेण्ड में न्यारा, अगर न्यारा नहीं तो बाबा से वह प्यार खैंच नहीं सकता। नहीं खींचता है तो औरों को भी नहीं दे सकता है। तो न्यारा बनने से बाबा देखता है ये मेरे काम के लायक बच्चा है। टाइम पर बच्चा कहाँ भी हाज़िर होगा तो बाप वहाँ हाज़िर हो जायेगा, यह बाबा का वरदान है। हज़ूर सदा आपके सामने हाज़िर रहेगा।

अभी घर जाने की घड़ियां सामने खड़ी हैं और घर जाने की तैयारी वो करता है जिसने स्नेह में सम्पन्न बनने की गिफ्ट ले ली है। मेरी भावना है जैसे बाबा ने मुझे आप समान बनाने की गिफ्ट दी है, यह गिफ्ट ही लिफ्ट का काम करती है। लिफ्ट में बैठो ऊपर चले जाओ। सीढ़ी चढ़ने की मेहनत करने की आवश्यकता ही नहीं है। इस लिफ्ट को वरदान के रूप में जीवन में लाने वाला निमित्त ऐसा लायक बनता है, जो उनसे अनेक प्रकार की सेवायें चलते-चलते हो जाती हैं। वह यह नहीं समझते हैं सेवा है, नैचुरल है। तो ऐसे मिसाल बनो। स्ट्रांग बनो।

बाबा के तीन शब्दों से बनें शब्दातीत

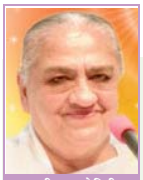
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

हम सबका मन कहता है कि हम सभी बाबा के समान बन जायें, सबके दिल में यही शुभ आशा व संकल्प है क्योंकि बाबा समान बनने के बिना न फरिश्ता बन सकते हैं, न देवता बन सकते हैं इसलिए संगम पर हमको बाबा समान तो बनना ही है। बाबा समान बनने के लिए जो शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा लास्ट में हम सब बच्चों के प्रति तीन शब्द उच्चारे थे, अगर वह तीन शब्द हम अपने जीवन में ध्यान पर रखें तो मैं समझती हूँ इन तीन शब्दों में बाप समान बहुत सहज बन सकते हैं।

तो बाबा के लास्ट यही शब्द थे कि निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। शिवबाबा है निराकार और हम साकार में हैं। अगर हमें निराकारी स्टेज तक पहुँचना है, तो बाबा ने जो कहा है वह बनना ही है, करना ही है, यह लगन हो। जैसे अमृतवेले उठकर बाबा से रूहरिहान करते हैं। हमारा यह ब्राह्मण जन्म, नया जन्म है। इसमें बाबा ने यही अटेन्शन खिंचवाया है कि तुम अपने को अवतार समझो। जैसे मैं ऊपर परमधाम से इस शरीर में अवतरित हुई हूँ कार्य करने के लिए। तो अवतार हूँ माना कहाँ से अवतरित हुई हूँ। तो अपना परमधाम, निराकार धाम याद आयेगा और निराकार धाम से मैं निराकार आत्मा इस साकार शरीर में प्रवेश हुई हूँ। हम परमात्मा भले नहीं हैं लेकिन आत्मा भी तो निराकार है ना। तो जब हम अपने को अवतार समझते हैं तो मैं आत्मा कहाँ से आई हूँ और क्यों आई हूँ? अवतार जो भी आये हैं वह कोई-न-कोई विशेष कार्य करने के लिए ही आते हैं। वह अपने को पैगम्बर व मैसेन्जर कहते हैं। तो मैं भी परमधाम से आत्मा उतरी हूँ, इस साकार ब्राह्मण तन में। यह हमारा अलौकिक जन्म ब्रह्मा बाबा द्वारा हुआ है, इसलिए हम बी.के. लिखते हैं। तो हम निराकार आत्माएं अवतरित हुई हैं। हम विश्व परिवर्तन करने वाले विश्व कल्याणकारी हैं, यही हमारा ऑक्यूपेशन है। जब हम अपने को विश्व कल्याणकारी कहते हैं तो हमें क्या कल्याण करना है? परिवर्तन क्या करना है? अपवित्र सृष्टि को पवित्र बनाना है, कलियुग को सतयुग बनाना है, यही हमारी ऑक्यूपेशन है। तो जब विश्व को परिवर्तन करना हमारा ऑक्यूपेशन है तो ज़रूर पहले स्व का परिवर्तन होगा तब विश्व का परिवर्तन होगा। स्व-परिवर्तन के बिना विश्व परिवर्तन कोई कर ही नहीं सकता है। विश्व की तो बात छोड़ो लेकिन कोई एक आत्मा का भी कल्याण नहीं कर सकते हैं, क्यों? क्योंकि प्रभाव पड़ता ही है स्व-परिवर्तन से।

वायुमण्डल नहीं है फिर तो कई बहाने हैं लेकिन अच्छा-अच्छा कहके जाते हैं लेकिन स्वयं अच्छे नहीं बनते हैं इसका भी कारण बाबा सुनाते हैं, आप एक समय पर एक सेवा करते हैं। करनी है एक समय पर तीन सेवा, तो कैसे होगा? जब याद में बैठते हैं तो बहुत आनंद आता है, उस समय स्टेज बहुत अच्छी होती है - ''वाह बाबा और मैं'' दूसरा न कोई। लेकिन जब वाणी में आते हैं तो मन्सा जो पावरफुल होनी चाहिए वह नहीं होती। वाणी पावरफुल होती है इसलिए उनकी भी वाणी में आता है - बहुत अच्छा, बहुत अच्छा... इस प्रकार वाणी तक तो आये लेकिन मन्सा कहाँ बदलती है। इसलिए एक समय पर तीन सेवा इकट्ठी करनी चाहिए वह नहीं होती। तभी वह प्रभाव पड़ेगा तीनों रीति से, मन्सा से भी, वाणी से भी और कर्मणा का कर्मणा में प्रभाव पड़ेगा।